G1626

अथ श्री पन्ना की पताका

ॐ

संपादक–
पं. सीताराम सिरवैया
पुरानी टेहरी, टीकमगढ़ (म.प्र.) - 472001
Mob. 9109573138

Scanned with OKEN Scanner

G1626

अथ श्री पन्ना की पताका

रचयिता

कविवर मुकुन्दलाल सिरवैया

संपादक-

सीताराम सिरवैया

मुकुन्द निकेतन, पुरानी टेहरी, टीकमगढ़ (म.प्र.)

Mob. 9109573138

पन्ना की पताका

1. संस्करण - प्रथम

2. वर्ष - 2007

3. प्रतियां - 500

6. मुद्रण

गोपिका प्रिंटिंग प्रेस

टीकमगढ़

7. टंकण

शंकर कम्प्यूटर

ग्राफिक्स

प्रकाशक-

पं. सीताराम सिरवैया

मूल्य 151/-

Scanned with OKEN Scanner

61626

कविवर मुकुन्द लाल सिरवैया स्मृति ग्रन्थमाला का प्रथम पुष्प

पन्ना की पताका

कवि की रचना, उसके जीवन में संजोई, वेदना, सम्वेदना अनुभव अनुभूतियों, अध्ययन एवं स्वाध्याय, आदर्शों और मान्यताओं एवं साधना का व्यष्टिगत एवं समष्टिगत रूपता विद्रूपतों का प्रतिबिम्ब होती है ।

कवि अपनी रचना में वह सब कुछ उड़ेल देना चाहता है जो उसने भोगा है, जाना है, देखा और सीखा है, फिर चाहे कोई उसकी ओर देखे या न देखे, परख या न परखे इससे वेपरवाह लेखन ही उसकी साधना है लेखन ही उसका जीवन है । उसकी भावना रहती है "गुन ना हिरानो, गुन गाहक हिरानो है" वह संस्कृत कवि भवभूति की भांति आशा के सहारे जीवित रहता है कि

"उत्पत्स्यते कोऽपि समान धर्मा,
कालो स्वयं निवरधि विपुल च पृथ्वी"

ओरछा साहित्य शौर्य एवं साधना की स्थली रही है । पश्चात् टीकमगढ़ राजधानी परिवर्तन के साथ यहां की भूमि पर भी भक्त विद्वज्जन एवं साहित्य मनीषी जन्म लेते रहें । कवि का जन्म तभी होता है जब कोई ईश्वर असं पृथ्वी पर प्रगट होता है । ऐसी ही एक विस्मृत प्रायः प्रतिभा पं. मुकुन्द लाल सिरवैया रहे । उनका जन्म टीकमगढ़ के पुरानी टेहरी में विक्रमी संवत् 1935 में हुआ था। इसी बुन्देली माटी में वे जन्मे, पले, बढ़े और पढ़े और रचनाकार बने । उन्हें भगवान शिव कुण्डेश्वर धाम से भूतभावन द्वारा अनुपम आशीर्वाद प्राप्त हुआ । उसी के सरस इन अनूठे काव्य ग्रंथों की रचना हुई । वे मेरे पूज्य पितामह थे । उनकी गोद में खेलने का सुअवसर मुझे मिला, उनका स्नेह और सान्निध्य मुझे मिला । उनका पाण्डित्य, साहित्य साधना और लेखन कला बहुत आयामी रही हैं । उनकी उन समस्त जीर्ण शीर्ण होती हुई रचनाओं को सुरक्षित रखकर पुनः उन्हें टंकिण कराकर सहेजे रखने का सौभाग्य मुझे मिला।

कविवर मुकुन्दलाल जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे । उनका रचना संसार विविध रूपों में प्राप्त होता है । वे एक ओर तो अग्रदास जी प्रियादास जी की परम्परा का निर्वाह भक्तमाल के रूप में करते हैं । वहीं शिव पुराण महात्म्य, भक्तिरस बोधिनी, विन्ध्येलोत्पत्ति मार्तण्ड, वारहमासा, पन्ना की पताका, कांठर का इतिहास जैसी ऐतिहासिक एवं काव्यात्मक रचनाओं के रचनाकार भी रहे हैं । कविवर मुकुन्दलालजी एक ऐसे इतिहास वेदत्ता है जिन्होंने विश्व की उत्पत्ति से वर्तमान यानी

Scanned with OKEN Scanner

-: कवि परिचय :-

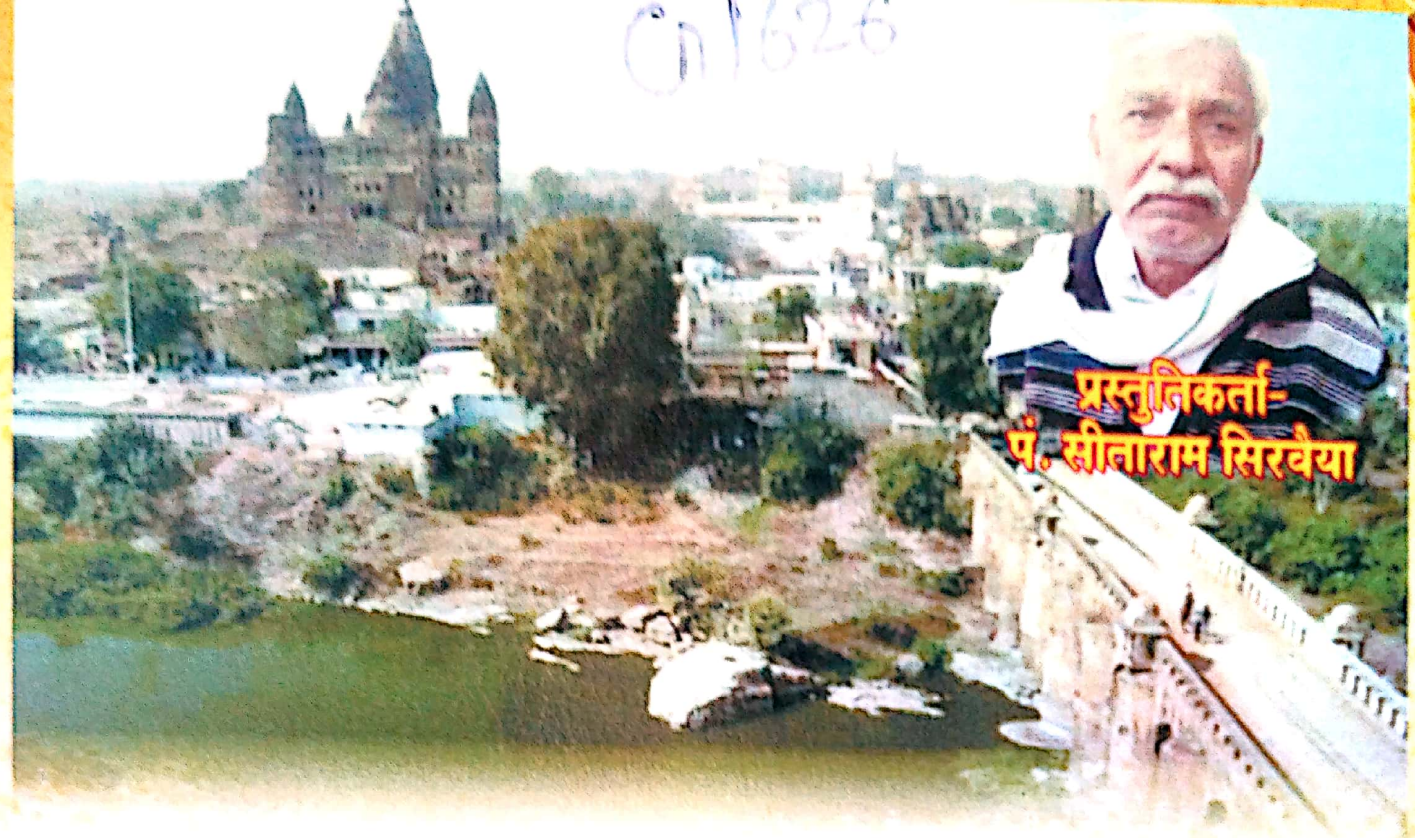

नाम-	कविवर मुकुन्दलाल सिरवैया
पिता का नाम-	पं. श्री घनश्याम उर्फ खेतसिंह
जन्मकाल-	है वृहां अंक अरु देव वाण सुजान संवत जानहु मार्ग शीर्ष शुक्ल नवमीं, भोम दिन उपजाहु
जन्म स्थान-	पुरानी टेहरी, टीकमगढ़ (म.प्र.)
शिक्षा-	साम्राज्य ईश्वरी प्रेरणा
व्यवसाय	फौज में हवलदार पद पर
कमकालीन साहित्यकार-	महारानी वृषभान, पजन सिंह रामचरण लालए रामदीन राय साहब
साहित्य भ्रमण-	कहीं नहीं
प्रकाशन-	दो रचनाएं प्रकाशित
जीवन यात्राएं-	चारो धाम महाराज प्रताप सिंह के साथ
विशेष घटनाएं-	भगवान कुण्डेश्वर शंकर जी के दर्शन
कृतियां-	शिव महात्म पुराण, भक्त रस बोधनी विन्थे लोत्य पत्य मांर्तड, कांठर का इतिहास, पन्ना की पताका विन्थे लोत्य पत्य मार्तड

प्रकाशक- पं. सीताराम सिरवैया

मुद्रक- शंकर कम्प्यूटर टी. मो. [illegible]